© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 09 | October – December 2017

भारतीय हिंदी लोकप्रिय सिनेमा और उसका इतिहास

मनोज कुमार, पीएच.डी शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

सार संक्षेप : सिनेमा चाहे वह हमारे देश का हो चाहे प्रदेश का हो, दोनों तरफ के सिनेमाओं का मकसद केवल मनोरंजन करना ही नहीं है बल्कि समाज को सही दिशा प्रदान करना है। समाज और सिनेमा एक दूसरे के पहलू है, क्योंकि जो समाज है वही सिनेमा है। समाज में जो कुछ परिवर्तित होता है उसी रूप में हम सिनेमा को देखते है, और जो सिनेमा में दिखाया जाता है, उसी को देखकर समाज उसमें तब्दील होना चाहता है इसलिए दोनों एक–दूसरे के पूरक है यह कोई अतिश्योक्ति नहीं बल्कि यथार्थ है। सिनेमा कहानी भी है, नाटक भी है, संगीत भी और चित्रकला भी। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि सेल्युलाइड पर लिखे जाने वाले साहित्य की आधुनिकतम विद्या सिनेमा है। सिनेमा द्वारा चित्रों को इस प्रकार एक के बाद एक प्रदर्शित किया जाता है, जिससे गति का आभास होता है। प्रस्तुत पेपर में शोधार्थी द्वारा लोकप्रिय हिंदी सिनेमा के इतिहास को अंगित किया गया है।

मुख्य शब्द : फिल्म, समाज, दर्शक, इतिहास, अभिव्यक्ति, प्रभाव, सरोकार, सेल्युलाइड, इतिहास

''फिल्म एक चित्र है, फिल्म शब्द है, फिल्म आंदोलन है, फिल्म नाटक है, फिल्म संगीत है, फिल्म एक कहानी है, फिल्म हजारों अभिव्यक्तिपूर्ण श्रव्य एवं दृश्य आख्यान है।''

–सत्यजीत रे

सिनेमा भूतकाल और वर्तमान काल में मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन है इसका प्रयोग कला, अभिव्यक्ति एवं शिक्षा के लिए किया जाता है। इसलिए कहा जाता है कि फिल्में समाज पर अपना प्रभाव छोड़ती ही हैं, साथ ही ये समाज का आइना भी होती हैं। इन फिल्मों में निहित सामाजिक सरोकार का उदेश्य समाज में सकारात्मकता का सम्प्रेषण करना होता है। अगर ये कहा जाए कि जिस देश में सिनेमा नहीं होता, वहां के दर्शक अपनी अच्छाइयों, बुराइयों से परिचित नहीं हो पाते, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सिनेमा हमें मनोरंजन के साथ शिक्षा, सहिष्णुता, एकता, अखंडता, सामाजिक संदेश, के साथ जीवन में आगे बढ़ने का संदेश भी देता है। इसके साथ हमें अथक प्रयासों में सफलता हासिल करने के लिए संघर्षमय जीवन जीने की प्ररेणा भी देता है। सिनेमा को जिस भी रूप में हम देखना चाहते है उसी रूप में हमको वह मिलेगा बशर्ते हमारे देखने–परखने का भाव सही होना चाहिए। सिनेमा एक ऐसी कला विधा है, जिसमें कलाकार मुक्त चुनाव और अपनी संवेदनशीलता के द्वारा जीवन और दृशय जगत से आवश्यक सच्चाईयां बटोरकर एक साहित्यकार की भांति उन्हें एक साथ क्रमबद्ध कर एक कृति में बदल देता है। इसी तरह वह हमारे लिए इस विश्व पुनरावलोकन के लिए एक ऐसे पैने दृष्टिकोण का निर्माण करता है, जो हमारे परिवेश और मानस की चेतन–अचेतन अन्तर्निहित सच्चाइयों को उजागर कर देता है।

संसार में सिनेमा का उद्भव एवं विकास

कला मनुष्य की सृजनात्मक सोच और उसकी चेतना के विकास से सीधी तरह जुड़ी होती है। कला के किसी भी विधा का जन्म अचानक नहीं होता। आरंभ में, किसी भी कला का जन्म एक सूक्ष्म रूप में होता है। सूक्ष्मरूप में जन्मी कला का विकास, धीरे–धीरे लोगों की कलात्मक सोच और उस दिशा में उनके द्वारा किए गए सतत प्रयोगों से परिपक्व होती चली जाती है। फिर समय के साथ–साथ वह कला, अपनी पूरी गरिमा और सृजनात्मक फैलाव के साथ मूर्त रूप में उभरकर सामने आती है। सिनेमा कला का आधुनिकतम रूप है। सिनेमा, कला का वह सशक्त माध्यम है जो अपने सशक्त दर्शकों को किसी खास विषय–वस्तु पर आधारित कथा को दिखाता है, बताता है और मनोरंजन करते हुए दर्शकों के ह्रदयों में गहरे उतर जाने की अभूतपूर्व क्षमता रखता है। सिनेमा, कहानी कहने का एक प्रभावशाली माध्यम है। अन्य कई कलाओं की तरह सिनेमा भी देश, काल, सामाजिक संरचना और व्यक्ति की समस्याओं से सीधा जुड़ा रहता है। सिनेमा, कला की कई विधाओं जैसे–साहित्य, चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि का मिला–जुला रूप होता है। अर्थात् सिनेमा समग्रता का दूसरा नाम है। सिनेमा भी विश्व की अन्य आधुनिक कलाओं की तरह, मनुष्यों की कलात्मक सोच और उसकी विराट चेतना से निकली अभिव्यक्ति का एक सशक्त तकनीकी माध्यम है।

बच्चन श्री वास्तव ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि सिनेमा के आविष्कार में महत्वपूर्ण प्रयास सिनेमा के आविष्कार के इतिहास में सन् 1833–1835 वर्ष अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। ''सिनेमा के आविष्कार में प्रथम महत्वपूर्ण प्रयास ''जैट्राप'' नामक यंत्र है, जिसका निर्माण 1835 में हुआ। जब इस यंत्र को घुमाया जाता, तब दृष्टा को चित्रों में गीत होने का आभास होता था। सिनेमा के आविष्कार में ससे महत्वपूर्ण भूमिका फ्रांसीसी वैज्ञानिक लुइस डेग्यूरे की है जिन्होंने सन् 1839 ई. में फोटोग्राफिक कैमरे का आविष्कार किया था। 1877 में सेन फ्रांसिसको में फोटोग्राफर ईडवियर्ड माईब्रिज ने एक प्रयोग किया। जिसमें उन्होंने एक पंक्ति में पच्चीस कैमरे लगाकर एक भागते हुए घोड़े के चित्र उतारे। सभी कैमरों के शॅटर एक धागे से एक प्रकार बांधे थे कि जब घोड़ा उन कैमरों के सामने से दौड़ा तब एक के बाद एक धागा टूटता गया तथा शाटर खुलकर बंद होते गए। इस प्रक्रिया में भागते हुए घोड़े के एक के बाद एक पच्चीस चित्र खींच गए। जिसे जोड़ा गया तो लगा कि घोड़ा दौड़ता हुआ दिखाई दिया यह एक अद्भूत प्रयोग था। माइब्रिज के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण आविष्कार सिनेमा के क्षेत्र में टामस एल्वा एडीसन का है। जिसमें 'फोनोग्राफ' और इलैक्टिक बल्व जिनके निरंतर प्रयोगों ने एक निश्चित रूपरेखा तैयार की। जिससे 3 अक्तूबर 1889 को अमेरिका

के न्यूजर्सी नगर के वेस्ट ओरेंज क्षेत्र में स्थित अपनी प्रयोगशाला में 'किनेमेटोस्कोप' नामक यंत्र का सफल प्रयोग किया। जिसमें आगे चलकर कुछ तकनीकी खामियों को दूर करके जार्ज इस्टमैन ने सेल्यूलाइड की फिल्म का आविष्कार करके किया सिनेमा के इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिन 28 दिसम्बर 1895 था जिस दिन फ्रांस के लूई ल्यूमियर और आगस्ट ल्यूमियर बंधुओं ने पेरिस के ग्रांड कैफे हाउस में पहली बार सिनेमेटोग्राफ का प्रदर्शन किया। उस कैफे में बैठे सभी लोगों के लिए वह दिन एक रोमांचकारी और आश्चर्य से भरा हुआ ऐतिहासिक दिन था। किसी ने शायद ही यह अनुमान किया होगा की फ्रांस की राजधानी पेरिस में फोटोग्राफी का सामान बेचने वाले दो सगे भाई अगस्त ल्युमियर एवं लुई ल्युमियर एक दिन मानव जाति को ऐसा बेशाकीमती वैज्ञानिक उपहार दे बैठेंगे जो विश्व भर में मनोरंजन के परिदृश्य में एक क्रांति होगी। विभिन्न देश–विदेश के महान फिल्मकारों के द्वारा दी गई परिभाषाओं को यहां शामिल करना उचित होगा कि उन्होंने फिल्मों को विभिन्न–विभिन्न रूपों में समझने में अधिकतर जीवन इसे समझने हुए और इसे लोगों के सामने अच्छा से अच्छा बनाने का प्रयास किया है। क्योंकि वी किसी के बारे में अधिक उचित तरीकें से टिप्पणी कर सकते हैं जिन्होंने किसी कला और दूसरे संदर्भों पर कार्य किया हो। इसलिए इस दिशाा में इन व्यक्तियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। सभी फिल्मों के जानने वालों को हम यहां शामिल नहीं कर सकते है लेकिन इस पंक्ति में कुछ महान जानकारों को शामिल कर रहे हैं। इसी दिशा में महान कलाकार, निर्देशक आस्त्रुक के अनुसार ''लिखे हुए शाब्दों की तरह सिनेमा भी एक भाषा है जिसे लिखने और पढ़ने के लिए नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है।'' डॉ. रोजर्स के अनुसार– चलचित्र किसी क्रिया को उत्प्रेरित करने के लिए एक उत्तरोत्तर अनुक्रम में प्रक्षेपित छायाचित्रों को एक लम्बी अवधि श्रृंखला द्वारा विचारों के सम्प्रेषण का एक माध्यम है। जगदीश चंद्र माथुर के अनुसार– ''वाक् चित्रों ने विश्व के कोने–कोने से जीवन की सांगोपांग छवियों, संगीत, ध्वनियों और बोलियों को एक–दूसरे के करीब रखा। इस तरह एक दुनिया का नारा तीव्र हुआ।''सामान्यतः चलचित्र का उपयोग मनोरंजन के लिए किया जाता है। इसकी आवश्यकता की अनुभूति तब होती जब व्यक्ति थक जाता है, अवकाश के समय कुछ मनोरंजन चाहता है। चलचित्र उसके अवधान को आकर्शित करता है, यही चलायमान चित्र अपने कथानक में दृष्टा तन–मन से चित्र–पत्र में अपने को खो देता है। जो दृश्य या संवाद चलचित्र में दिखाई या सुनाई पड़ते हैं, वे उस पर गहरा प्रभाव डालते हैं। यह प्रभाव कभी क्षणिक होता है। कभी–कभी इसका प्रभाव स्थायी रूप से पड़ता है। मानव–मन पर गहरा प्रभाव डालने की क्षमता के कारण चलचित्र जनसंचार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है।

भारत में हिंदी सिनेमा का इतिहास

देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के अनुसार 'वर्तमान युग में यदि किसी कला माध्यम का प्रभाव सर्वाधिक है तो निस्संदेह वे फिल्में हैं। टाइम ऑफ इंडिया, मुंबई के 7 जुलाई 1896 के अंक में एक विदेशी फिल्म के प्रदर्शन का विज्ञापन प्रकाशित हुआ था। सार्वजनिक रूप से किसी फिल्म के प्रदर्शन की सूचना देने वाला यह भारत का प्रथम विज्ञापन था। उसी दिन लुमियर बंधुओं ने भारत में पहली बार बंबई के वाटसन होटल में 'मैजिक लैंप' जो छःह छोटे–छोटे चलचित्रों का एक संग्रह था, दिखाया गया था। इस संग्रह में 'एंट्री ऑफ सिनेमाग्राफ, 'एडिमोलेशान', 'अराइवल ऑफ द ट्रेन, 'द सी बर्थ',' लीविंग द फैक्ट्री', तथा सोल्जर्स आफ हवील्स' शामिल थे। 'मैजिक लैंप' देखने का टिकट दर एक रुपया निर्धारित किया गया था। यही संग्रह 1897 में कलकता में भी प्रदर्शित किया गया। इसी वर्ष हरिशचंद्र सखाराव भटवडेकर उर्फ सावेदादा ने अपने एक अंग्रेज मित्र के सहयोग से बंबई के हैंगिंग गार्डन में एक कुश्ती खेल को कैमरे मे कैद किया था, यह भारत में चलचित्र की पहली नींव थी। लुमियर बंधु अपनी उस मशीन को दुनिया के सामने लाए थे, जो चलती हुई तस्वीरें दिखाती थी। जाहिर था मनुष्य ने अपने जीवन और प्रकृति के यथार्थ की अभिव्यक्त करने के लिए जितनी कलाओं का आविष्कार किया था, उनमें यह सबसे ज्यादा प्रभावशाली था। इस नवीनतम आविष्कार ने यहां के लोगों को भी प्रभावित किया। महाराष्ट्र के एक फोटोग्राफर सखाराम भाटवाडेकर उर्फ सवे दादा ने 1899 में इग्लेंड से एक फिल्म कैमरा मंगाया। मुंबई के हैंगिंग गार्डेन में आयोजित कुश्ती दंगल में कृषण नहवी और पुंडलीक नामक दो पहलवानों के बीच का दर्शय बनाया।बाद में वह आस–पास के दृश्यों को उसमें कैद करने लगा। 1901 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, लंदन में एक भारतीय छात्र आर.पी. परांजपे को गणित की परीक्षा में सबसे अधिक अंक हासिल हुए थे, उसके भारत आगमन पर सावेदादा ने उसे कैमरे में कैद कर एक लघु चलचित्र बनाया। मान्यता है कि यह भारत का पहला वृतचित्र है। 1903 में सावेदादा ने अपने अमरीकी मित्र बागोग्राफ की मदद से एक और चलचित्र बनाया, जिसको नाम 'दिल्ली दरबार ऑफ कर्ज़न' था।

भारतीय फिल्म इतिहास में जमशेदजी फ्राइम मदन एक अहम नाम हैं। वे पारसी शैली के मदन थियेटर के मालिक के साथ–साथ बहुत बड़े व्यवसायी भी थे। मदन प्रथम भारतीय हैं, जिन्होंने 1902 में कलकता मे एक खुले मैदान में टैंट लगाकर बाइस्कोप शो प्रांरभ किया। 1905 में ज्योति सरकार नामक एक स्वप्नदर्शी फिल्मकार ने बंग–भंग आंदोलन के अग्रणी नेता सुरेद्रनाथ सेन के व्यक्तित्व और आंदोलन के औचित्य पर एक प्रभावी वृत–चित्र 'ग्रेट बेंगाल पार्टीशन मूवमेंट' का निर्माण किया था। यह भारत में बनने वाला पहला राजनैतिक वृत्त था। इन्होंने 1907 में कलकता में एक स्थाई सिनेमा घर का निर्माण किया। 'एलिफिस्टन पिक्चर पैलेस' यह देश का प्रथम सिनेमाघर हुआ। इसी प्रकार 1911 में एक ब्रिटिश छायाकार चार्ल्स अर्बन ने 'दिल्ली दरबार' का रंगीन फिल्मांकन किया था। चार्ल्स के इलावा दो भारतीय फिल्मकारों–हीरालाल सेन और एस.एन. पाटनकर ने भी इस महत्वाकांक्षी राजनैतिक समारोह का फिल्मांकन किया था। 1912 में रामचंद्र गोपाल तोरणे (दादा साहेब तोरणे) ने प्रथम फीचर फिल्म 'पुंडलिक' बनाई। लेकिन विशेषज्ञों ने इसे प्रथम भारतीय फिल्म मानने से इंकार किया है, क्योंकि इसके कैमरामैन एवं अन्य तकनीशियन विदेशी थे तथा इसकी प्रोसेसिंग लंदन में हुई थी। भारतीय सिनेमा के शुरूआती दौर में भावी फिल्मों के लिए दिशा

की खोज जारी थी। इसके लिए समयानुसार मुहावरे गढ़े जा रहे थे। जो 1913 में धुंडीराज गोविंद फाल्के (1870–1944,दादा साहेब फाल्के) ने 'राजा हरिशचंद्र' नामक पौराणिक कथा पर फीचर फिल्म बनाई, जिसे संपूर्ण रूप से प्रथम भारतीय फीचर फिल्म की मान्यता प्राप्त है। क्योंकि इसके शीर्षक को दर्शाने के लिए हिंदी का प्रयोग किया गया था। इस तरह यह मराठी भाषी होते हुए भी दादा साहब फाल्के ने हिंदी भाषा के राष्ट्रव्यापी स्वरूप को पहचान लिया था।

यह फिल्म 40 मिनट व लंबाई 3700 फीट का प्रदर्शान 21 अप्रैल 1931 को तत्कालीन बम्बई के ग्रांटरोड स्थित ओलम्पिया थियेटर में प्रीमियर शो हुआ और सार्वजनिक प्रदर्शन 3 मई 1931 को के पूर्व पाटणकर एंड कंपनी के पाटणकर करंदीकर और दिवेकर ने एक फीचर फिल्म 'सावित्री' बनाई थी। लेकिन इस फिल्म में इतनी त्रुटियां थीं कि वह परदे पर पर्दापण नहीं कर पाई। अगर यह फिल्म सफलतापूर्वक प्रदर्षित हो जाती तो प्रथम भारतीय फिल्म होती। यह वी वर्ष 1913 है, जहां से भारतीय सिनेमा ने एक विस्तृत, विधिवत एवं विभिन्न आकार–प्रकार लेना प्रारंभ किया। राजा हरिशचंद्र के बाद दादा साहेब फाल्के ने 'लंका दहन', श्रीकृष्ण जन्म' और 'कालिया मर्दन' बनाई जो सभी पौराणिक कथाओं पर ही आधारित थीं। देश में 1913 से लेकर 1921 तक लगभग 75 फिल्मों का निर्माण किय गिरगांव स्थित कोरेनेशान सिनेमा में किया गया था। इसी वर्ष 'राजा हरिशचंद्र' फिल्म प्रदर्शित होने लग गया था और यह सब फिल्में धार्मिक कथाओं पर ही बनी थीं।

जल्दी ही पौराणिक कथाओं से आगे नई मंजिलों की तलाश शुरू कर दी। बंगाल फिल्मकार धीरेंद्र नाथ गांगुली की 1921 में बनी 'विलेत फरेत' इग्लैंड से लौटे एक व्यक्ति की कहानी थी जिसने 20वीं सदी की शुरुआत में बंगाल में मौजूद रूढ़िवादी परंपराओं का मख़ौल उड़ाया था।'मूक फिल्मों के युग में 'कोहिनुर फ़िल्मस्' का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस कंपनी की स्थापना द्वारकादास एन.संपत ने की थी। इस कंपनी के बैनर तले 98 फ़ीचर फिल्मों का निर्माण किया गया। 'विक्रम उर्वशी' 1920, तथा 'सती अनुसूइया' 1921, उनकी चर्चित फिल्म थी। 1927 में दुनिया की प्रथम सवाक फिल्म 'द जार्ज सिगर' बनाई गई जिसे वार्नर बंधुओं ने निर्मित किया था। इससे वार्नर बंधुओं को पैंतीस लाख डालर का लाभ हुआ और इससे उत्साहित होकर उन्होंने सन् 1928 में दूसरी बोलती फिल्म 'द लाइट्स एंड न्यूर्याक' का निर्माण किया। विदेशों में सवाक फिल्मों के निर्माण से भारत में फिल्म बनाने की होड़ लग गई जिसमें आर्देशिर एम. ईरानी एवं जमशेद जी मदन प्रमुख हैं। कोलकाता की एक बांग्ला फिल्म कंपनी तेजमाला ने रंगमंच में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाले शिशिर भादुड़ी के साथ मिलकर 'अधारे आलो' बनाई। शरतचंद्र की मशहूर कहानी पर आधारित इस फ़िल्म के साथ ही भारतीय सिनेमा में समकालीन मुद्दों का प्रवेश हुआ। इसी दौरान महाराष्ट्र फ़िल्म कंपनी ने 'सिहंनाद' बनाई जिसमें शिवाजी का जीवन और मराठों का गौरवशाली इतिहास दिखाया गया था। 14 मार्च 1931 में भारतीय सिने–जगत में एक इंकलाबी बदलाव आया और चलती–फिरती तस्वीरें अब बोलने भी लगी। ध्वनि फिल्म 'आलमआरा' का प्रदर्शन बम्बई के मेजिस्टिक सिनेमा में हुआ। इस फिल्म के निर्देशक आर्देशिर ईरानी और इसका निर्माण 'इम्पीरियल फिल्म कंपनी' ने किया। सवाक् फिल्म के चलते मूंक फिल्में बंद हो गई। मई 1931 में कोलकाता में दूसरी बोलती फ़िल्म बनी जिसका नाम था–'शीरी फ़रहाद'। जे.जे. मदान निर्देशित इस फिल्म में कुल 18 गाने थे। 'आलमआरा' की सफलता के बाद सिनेमा में सांउड और गीत–संगीत को इतनी अहमियत मिलने लगी कि 1932 में बनी 'इंद्रसभा' में 69 गाने रखे गए।

बोलती फिल्मों की शुरूआत के साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं में फिल्म निर्माण में भी तेज़ी आई। देश के अलग–अलग सूबों में हिंदी, बांग्ला, तमिल, और तेलुगू में भी फिल्मों का निर्माण होने लगा। 1932 में इन चारों भाषाओं में कुल 27 फिल्में बनाई गई। महाराष्ट्र फिल्म कंपनी के चार महानतम हस्तियों में शुमार किए वाले नाम जिन्होने फिल्म निर्माण को बुलंदियों पर पहुंचाया उनमें शामिल है विष्णुकांत दामले, फतेलाल, वी शांताराम और बाबूलाल पेंदारकर सभी ने एक साथ मिलकर प्रभात फिल्म कंपनी की शुरूआत की। 1933 में इस कंपनी को कोल्हापुर से पुणे में स्थानांरित कर दिया गया। इस कंपनी का मंच उन दिनों के अन्य स्टूडियो की तुलना में सबसे बड़ा मंच था। इस कंपनी में लैबोरटी, संपादन और ध्वनि संयोजन जैसी सभी सुविधाएं उपलब्ध थी। प्रभात फिल्म कंपनी सबसे बड़ी हिट फिल्म वी शांताराम ने 1934 में 'अमृत मंथन' इसी के साथ 1936 में बनी 'अमृत ज्योति' का प्रदर्शान वेनिशा फिल्म समारोह में हुआ। सन् 1937 में बनी दामले फतेलाल द्वारा निर्मित 'संत तुकाराम' भारत की पहली थी जिसे वेनिस फिल्म समारोह में पुरस्कृत किया गया। वही शांताराम की 'पड़ौसी' व आदमी ऐसी फिल्में थी जिनका प्रचार प्रसार और ख्याति इस प्रकार चली की उनका उस जमाने में हर आदमी पर इसका प्रभाव देखने का मिला। इसी फिल्म कंपनी की अनेक फिल्मों को मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में बनाया गया। सन् 1938 में 'माजा गुलाम' बनी जो मराठी और 'मेरा लड़का' के नाम से हिंदी भाषा में बनी थीं। इसी तरह सन् 1939 में वी शांताराम द्वारा निर्मित मराठी फिल्म 'मानूस' को हिंदी में 'आदमी' के रूप में निर्मित किया गया था। 1941 में दामले और फतेलाल ने हिंदी और मराठी में 'संत साधु' बनाई थी और वी शांताराम ने 'शोजारी' फिल्म को मराठी में और 'पड़ौसी' को हिंदी में एक साथ बनाया था। इसी वर्ष में बनी 'दुनिया न माने' विश्व विख्यात फिल्म रही थी और इसी फिल्म के नाम से मराठी में 'कुंकु' भी निर्मित की गई थी। सन् 1941 में सुबोध मुखर्जी ने अपने निर्देशान में 'झूला' और सन् 1943 में 'किस्मत' का निर्माण किया। अमिया चक्रवती ने 1944 में दीलिप कुमार अभिनित 'ज्वारभाटा' का निर्माण किया। धीरे–धीरे यह फिल्म कंपनी बंद होने लगी।

इसी वर्ष सशधर मुखर्जी ने फिल्मीस्तान फिल्म कंपनी की स्थापना की। अभिनेता अशोक कुमार और निर्देशाक ज्ञान मुखर्जी भी फिल्मीस्तान के साथ काम करने लगे। देवानंद, कमाल अमरोही, नितिन बोस, फणी मजूमदार जैसी बड़ी हस्तियों ने फिल्मीस्तान के साथ अपने फिल्मी कैरियर की शुरूआत की। 1944 में राजा नेने ने प्रभात फिल्म कंपनी के लिए मराठी में 'दहा बजे' और हिंदी में 'दस बजे' का निर्देशन किया। 1946 में पी एल संतोषी ने इस कंपनी के बैनर के नीचे ही 'हम एक हैं' फिल्म का निर्माण किया था जो सदाबाहर अभिनेता देवानंद की पहली फिल्म थी। प्रभात फिल्म कंपनी छोडकर आये वी शांताराम ने अपने

द्वारा बम्बई में निर्मित राजकमल कला मंदिर ने 1945 में 'डॉ. कोटनिश की अमर कहानी' का निर्माण किया। इस फिल्म को अमेरिका और वेनिस फिल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया। 1946 में मास्टर विनायक ने इस कंपनी के लिए 'जीवन यात्रा' नामक फिल्म का निर्माण किया जिसमें लता मंगेशकर ने ग्रामीण लड़की की भूमिका निभाई थी। सन् 1947 में वी शांताराम ने बाबूराव पेंटर के साथ मराठी में 'लोक शाहिर राम जोशी' और हिदी में 'मतवाला शामर राम जोशी' का निर्माण किया। वी.शांताराम की 'दुनिया ना माने', 'आदमी', पीसी बरूआ की 'देवदास' और 'मुक्ति',देवकी बोस की' विद्यापति' और 'सीता' निमित बोस की 'बड़ी बहन' फ्रेंज ओस्टिन की 'अछुत कन्या' वी दामले और फतेलाल की 'संत तुकाराम' महबूब की 'वतन' एक ही रास्ता' और 'औरत' जैसी फिल्मों ने कुरीतियों की सीख दी। अधिकांश फिल्में समाज में व्याप्त अन्तर्विरोध पर आधारित थी। उधर प्रभात फिल्म कंपनी का जो सुनहरा दौर रहा था वो 1952 के आते–आते खत्म होने लगा और आखिरकार प्रभात फिल्म कंपनी 1953 में कंपनी बंद हो गई। क्योकि इसमें जो निर्देशक साथ में जुड़े थे उन्होंने कई अपनी–अपनी फिल्म कंपनी खोल ली थी। सन् 1952 में भारत में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित हुआ। इसी को हम वर्तमान में फिल्म पुरस्कार समारोह के नाम से जानते है। इसी के द्वारा भारतीय सिनेमा जगत की महता स्पष्ट हुई। सत्यजित रे की 'पाथेर पांचाली' का अवतरण 1953 में हुआ जिसे देशा–विदेशा में पुरस्कृत किया गया। यह फिल्म मानवीय संवेदनाओं पर आधारित सर्वप्रथम कृति थी जिसे विशिष्ट पुरस्कार मिला। विमल रॉय की 'जो बीघा जमीन' महबूब की 'आन' 'मदर इंडिया', के अब्बास की 'मुन्ना' और 'राही', राजकपूर की 'आवारा', 'बूट पॉलिश','जागते रहो', वी शांताराम की 'दो आंखें बारह हाथ', गुरुदत्त की 'प्यासा'–ये सभी फिल्में यथार्थ और इन्सानियत संबंधी सदगुणों पर प्रकाशा डालने वाली थीं। इन फिल्मों ने भारत के दर्शकों पर तो जादू किया ही, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इन्हीं के कारण भारत की धाक जम गयी। 1955 में बनी 'झलक झलक पायल बाजे' 1956 में बनी 'दो आंखें बारह हाथ' 1959 में बनी 'नवरंग' सन् 1964 में 'गीत गाया पत्थरों ने' और 1971 में बनी 'जल बिन मछली नृत्य बिन बिजली' और इसके बाद 1972 में 'पिंजरा' नामक फिल्में इस कंपनी ने बनाई जो दर्शकों द्वारा भरपूर पंसद की गई। सिनेमेटोग्राफ अधिनियम 1952 और सेंसर बोर्ड : फिल्मों के निर्माण, प्रसारण व वितरण को विनियत करने के लिए यह अधिनियम संसद द्वारा 1952 में पास किया गया था। इसका उदेश्य समाज को स्वच्छ और स्वस्थ मनोरंजन देना है। अधिनयम में चार भाग हैं। भाग–1, भाग–2, भाग– 4 पूरे भारत वर्ष पर लागू होते हैं जबकि भाग–3 में दिए गए प्रावधान मात्र केंद्र–शाासित प्रदेशों पर ही लागू होते हैं। समय–समय इस अधिनियम में कुछ महत्वपूर्ण संशोधन भी किए गए हैं। इस अधिनियम के अंतर्गत कुल चार भागों में फिल्म प्रमाण पत्र देने का प्रावधान है। वर्तमान में लागू इस अधिनियम के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित हैं– केंद्र सरकार एक फिल्म प्रमाणन परिषद अर्थात फिल्म सेंसर बोर्ड बनाएगी, जो भारत में प्रदर्शित की जाने वाली फिल्मों को देखकर बताएगी की यह फिल्म सार्वजनिक प्रदर्शन के उपयुक्त है या नहीं। सेंसर बोर्ड द्वारा प्रमाण–पत्र जारी करने के बाद ही फिल्म का सार्वजनिक प्रदर्शन किया जा सकेगा।

1. फिल्म का अर्थ किसी सिनेमेटोग्राफ फिल्म से है। फिल्म के प्रदर्शान हेतु प्रयोग किए जाने वाले उपकरण भी 'सिनेमेटोग्राफ' की परिभाषा के अन्तर्गत आते हैं।
2. चूंकि आजकल प्री–रिकॉडिड कैसेटों के जरिए वीसीआर द्वारा भी फिल्मों का प्रदर्शन होता है इसलिए वीसीआर तथा उसकी कैसेटें भी इस अधिनियम के अंतर्गत सिनेमेटोग्राफ उपकरण मानी गई हैं।
3. केवल वयस्कों के देखने योग्य फिल्मों को सेंसर बोर्ड द्वारा 'ए' प्रमाण–पत्र दिया जाएगा, जबकि अन्य फिल्मों को 'बी' या 'सी' प्रमाण–पत्र दिया जाएगा। 'अ' प्रमाण–पत्र वाली फिल्में केवल वयस्क लोग ही देख सकेंगे, जो व्यक्ति 18 वर्ष आयु पूरी कर चुका है उसे वयस्क माना जाएगा। अधिनियम के प्रावधान टेलीविजन माध्यम पर भी समान रूप से लागू होंगे।
4. यदि फिल्म सेंसर बोर्ड के किसी निर्णय से किसी पक्ष को कोई आपति हो तो 'अपीलिय–प्राधिकरण' के समक्ष आवेदन कर सकता है। इस प्राधिकरण का गठन केंद्र सरकार द्वारा किया जाएगा और इसकी सूचना भारत के राजपत्र में अधिसूचित की जाएगी।
5. सिनेमाघरों तथा सिनेमेटोग्राफ संबंधी अन्य उपकरणों को संचालित करने के लिए सरकार द्वारा अधिकृत अधिकारी से लाइसेंस लेना अनिवार्य है। बिना लाइसेंस के कोई भी व्यक्ति फिल्म आदि का प्रसारण नहीं कर सकता है।

भारत में फिल्म उद्योग विश्व के सबसे बड़े फिल्म उद्योगों में शामिल है, जिसमें हर वर्ष एक हजार से भी अधिक फ़िचर फिल्मों से अधिक और पंद्रह सौ से अधिक लघु फिल्मों का निर्माण होता हैं। फिल्म निर्माण और उनका प्रदर्शन जनसंचार का ही नहीं अपितु जनसंपर्क, सांस्कृतियों के आदान–प्रदान, कलाओं का आपसी संगम, ज्ञानवर्धन का सबसे बड़ा केंद्र है। जिनके माध्यम से हम किसी दूसरी संस्कृति को जानते है और दूसरों को अपनी कला संस्कृति को दिखाने का प्रयास करते है। यह किसी भी देशा की संस्कृति की परम्परावादी, आधुनिकतावादी, रीतिरिवाजों को दिखाकर हममें जनसंपर्क करवाने का एक सशक्त माध्यम के रूप में हमारे सामने ऊभरकर सामने आता है।इस अधिनियम के अंतर्गत 1958 में सेंसरशिप नियम बनाये गए। इन्ही नियमों के अंतर्गत वर्तमान केंद्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड कार्य कर रहा है। बोर्ड ने 2011 में 1255 फिल्में पास की। जो सैल्यूलाइड फिल्में थीं। 862 वीडियो फिल्म, 45 डीजिटल फिल्में, 244 विदेशी फिल्में शामिल थीं। बोर्ड ने कुल 13526 फिल्मों प्रमाण पत्र जारी किये जिनमें सभी फिल्में शामिल थीं। सभी 13526 प्रमाण पत्रों में से 9103 को 'यू' केटेगरी, 3590 को 'यू ए' केटेगरी, 833 को 'ए' केटेगरी में

शामिल किया गया।बोर्ड ने 2011 में विभिन्न केटेगरी की फिल्मों से फीस के रूप में 7,75,29,624 रुपये कमाये। बोर्ड ने 2001 से 2011 तक निम्न फिल्मों का निर्माण हुआ जिनमे 2001 में 1023 फिल्में, 2002 में 943 फिल्में, 2003 में 877 फिल्में, 2004 में 934 फिल्में, 2005 में 1041 फिल्में,2006 में 1091 फिल्में, 2007 में 1146 फिल्में, 2008 में 1335 फिल्में,2009 में, 1288 फिल्में, 2010 में 1274 फिल्में, और 2011 में 1255 फिल्मों का निर्माण हुआ।

निष्कर्ष : फिल्में देश के लोगों का मनोरंजन करने वाले के साथ–साथ सरकार की कमाई का भी एक अच्छा व्यवसाय है। सरकार इस पैसे का बहुत बड़ा हिस्सा फिल्म निर्माण में लगे निर्देशकों को अनुदान के तौर पर समय–समय पर देती रहती है जिससे विभिन्न भाषाओं में बनने वाली फिल्मों का विकास हो सके और इन्ही फिल्मों के माध्यम से लोगों के अंदर हर तरह देश के प्रति समर्पण एवं विकास के संदर्भ में विभिन्न तरीकें से योगदान दिया जा सके। इसके अलावा जो देश की विभिन्न विकास योजनाओं पर समय–समय पर खर्च होता रहता है। समाज जिस तरह से परिवर्तित हो रहा है उसी तरीकें से फिल्मकार समाज के परिवेश को लेकर ही फिल्मों का निर्माण करते है इसलिए सिनेमा का क्रमिक विकास हुआ है और आज का सिनेमा अनेक लोगों की सृजनात्मक सोच और कलात्मक प्रयासों का नतीजा है।

संदर्भ पुस्तक सामग्री :–

1. तिवारी, श्रीराम, पटकभा, मध्यप्रदेश फिल्म विकास निमग का प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 33
2. बच्चन, श्रीवास्तव भारतीय फिल्मों की कहानी, पृ. सख्या 15
3. कुमार, हरीश, सिनेमा और साहित्य, संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृ. संख्या 53
4. सिंहा, प्रसून भारतीय सिनेमा एक अनंत यात्रा, दिल्ली, श्री नटराजन प्रकाशन पृ. सख्या 20
5 करूणा, शंकर, भारतीय फिल्मों का इतिहास, रंगभूमि बुक डिपो, दरियागंज, दिल्ली पृष्ठ संख्या 5
6 समसामयिक सृजन अक्तूबर–मार्च 2012–13 में कृष्णनमोहन का लेख : मूक फिल्मों से शुरू हुआ भारतीय सिनेमा का इतिहास पृ. 7
7 आजकल में रविराज पटेल का लेखः भारत में सिनेमा का प्रवेश एवं प्रारंभिक गतिविधियां, पृष्ठ 10
8 दिलचस्प, हिंदी फिल्मों का संक्षिप्त इतिहास, भारतीय पुस्तक परिशद,, पृष्ठ संख्या–21
9 केंद्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड की वार्शिक रिपोर्ट 2011
10 आजकल अक्तूबर 2012 में पांडेय, ज्ञानप्रकाश का लेख : हिंदी सिनेमा के बदलते प्रतिमान, पृष्ठ 17
11 भारतीय सिनेमाटोग्राफ एक्ट 1952